(3). कर्म (Action)

कर्म का आधार द्रव्य है। "कर्म वह गतिशील व्यापार है, जिसके कारण द्रव्यों का स्थान-परिवर्तन होता है।" कर्म मूर्त द्रव्यों का गतिशील व्यापार है। मूर्त द्रव्य पाँच (5) हैं — पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और मन। कर्म का निवास इन्हीं द्रव्यों में होता है। कर्म के गुण नहीं होते। यह केवल उन्हीं सीमित द्रव्यों में रह सकता है, जो स्थान परिवर्तन करते हैं। यह सर्वत्र असीम द्रव्यों में नहीं रह सकता, क्योंकि इसका स्थान-परिवर्तन संभव नहीं है। उदाहरणार्थ, आकाश सर्वत्र व्याप्त है, इसमें कर्म नहीं होता। इसी प्रकार, काल एवं दिक् तथा परमात्मा में भी कर्म नहीं होता क्योंकि ये सर्वव्यापक है। कर्म निगुण एवं सक्रिय होता है। इस प्रकार से, "कर्म वह है जो द्रव्य में समवेत है, जो गुण से शून्य है तथा जो संयोग और विभाग का साक्षात् कारण है"।

कर्म की विशेषताएँ :→ कर्म की निम्न विशेषताएँ होती हैं, जो इस प्रकार से है —

(1)→ **कर्म क्षणिक होता है →** कर्म कुछ ही समय/काल तक जीवित रहता है। जैसे, गेंद को छत से नीचे की ओर फेंकने में कर्म होता है, परन्तु यह कर्म चन्द क्षणों तक ही कायम रहता है। इस प्रकार से एक स्थान पर एक पल में केवल एक ही कर्म हो सकता है। एक के बाद दूसरा, दूसरे के बाद तीसरा और इसी प्रकार कर्मों की श्रृंखला बन जाती है। अत: कर्म क्षणिक होता है।

(2)- **कर्म एक समय एक ही द्रव्य में होता है →** कर्म सभी द्रव्यों में नहीं पाया जाता है। जैसे, असीमित द्रव्य - आकाश, काल, आत्मा, मन - कर्म से रहित हैं। इन द्रव्यों का स्थान परिवर्तन नहीं हो सकता है। वे एक स्थान से दूसरे स्थान में

गतिशील नहीं हो सकते हैं। यही कारण है कि इन द्रव्यों में कर्म का अभाव है। कर्म केवल सीमित द्रव्य में ही होता है।

(3). कर्म से निश्चित द्रव्यों का निर्माण नहीं हो सकता - किसी सावयव द्रव्य का निर्माण उसके अंशों के संयोग से होता है। संयोग एक गुण है। परन्तु कर्म निर्गुण होने के कारण संयोग से भी रहित है इसलिए कर्म से मिश्रित द्रव्यों का निर्माण संभव नहीं है।

(4). कर्म निर्गुण रहता है - कर्म गतिशील है, किंतु गुण गतिहीन या निष्क्रिय है। इसलिए कर्म में गुण नहीं रहते। अर्थात् कर्म गुण से शून्य है। यह निर्गुण है। वैशेषिक दर्शन में धीमा या तेज होना कर्म का लक्षण है, उसका गुण नहीं।

(5). कर्म अपने कार्य या फल से संयोग स्थापित नहीं कर सकता है।

कर्म के कारण भेद :→ प्रशस्तपाद ने कर्म का होना कुछ उपाधियों के कारण बताया है। वे हैं -

(i). गुरुत्व - भारी द्रव्य गुरुत्व के कारण पृथ्वी की ओर गिरते हैं। अतः भारीपन कर्म का कारण है।

(ii). तरलता - तरल पदार्थों में गति दिखाई पड़ती है। यही कारण है कि जल, दूध, तेल इत्यादि में गति है।

(iii). भावना - भावना के कारण जीवात्माओं में क्रियाशीलता होती है।

(iv). संयोग - संयोग के कारण भी गति का अभिर्भाव होता है। जैसे, छत से फेंकी जाने वाली गेंद का संयोग जब पृथ्वी से होता है तो कर्म होता है। कर्म के कारण ही संयोग और वियोग दोनों होते हैं।

कर्म के प्रकार :→

वैशेषिक दर्शन में पाँच प्रकार (5) के कर्मों का वर्णन किया गया है। ये पाँच कर्म हैं — उत्क्षेपण, अवक्षेपण, आकुञ्चन, प्रसारण एवं गमन।
'वैशेषिक सूत्र' में इसका वर्णन करते हुए कहा गया है —
" उत्क्षेपणमवक्षेपणमाकुञ्चनं प्रसारणं गमनमिति कर्माणि ॥7॥.

(1). उत्क्षेपण → उत्क्षेपण उस कर्म को कहते हैं जिसके द्वारा वस्तु का संयोग ऊपर के प्रदेश से होता है। जैसे, पत्थर का आकाश की ओर फेंकना इस कर्म का उदाहरण है।

(2). अवक्षेपण → अवक्षेपण उस कर्म को कहते हैं जिससे वस्तु का नीचे के प्रदेश से संयोग होता है। जैसे- छत पर से नीचे की ओर पत्थर फेंकना।

वैशेषिक दर्शन में उत्क्षेपण तथा अवक्षेपण को ऊखल तथा मूसल के उदाहरण के द्वारा बताया गया है। जिस प्रकार हाथ की गति से मूसल ऊपर उठता है तो उसे उत्क्षेपण कहते हैं ठीक उसी प्रकार हाथ की गति से मूसल को नीचे लाया जाता है और उसका संयोग ऊखल से होता है, तो इस क्रिया को अवक्षेपण कहा जाता है। हवा के प्रभाव से धूल, पत्ते, कागज आदि का ऊपर जाना उत्क्षेपण है। आँधी, तूफान, भूकम्प आदि के फलस्वरूप पेड़, पौधे, मकान आदि का गिरना अवक्षेपण के उदाहरण हैं।

(3). आकुञ्चन → आकुंचन से तात्पर्य है - 'सिकुड़ना'। यह वह क्रिया है जिसके द्वारा वस्तु के अवयव एक-दूसरे के निकट आ जाते हैं। हाथ-पैर मोड़ना आकुंचन का उदाहरण है।

(4). प्रसारण → प्रसारण का अर्थ फैलाना है। इस कर्म के द्वारा वस्तु के अवयव एक-दूसरे से दूर हो जाते हैं। मुड़े हुए कागज को पहले जैसा कर देना इस कर्म का उदाहरण है। मुड़े हुए हाथ, पैर, वस्त्र आदि को फैलाना 'प्रसारण' है।

(5). गमन → गमन को सामान्यतः हम जाने के अर्थ में लेते हैं, परन्तु वैशेषिक दर्शन में उपर्युक्त चारों कर्मों के अतिरिक्त सभी प्रकार के कर्म गमन में शामिल हैं। भ्रमण करना, आगे की तरफ का ऊपर की ओर उठना, बालक का दौड़ना इत्यादि गमन के विविध रूप हैं।

इस प्रकार से कर्मों के विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि वैशेषिक दर्शन में कर्मों का विशद विवेचन किया गया है और कर्मों को अति महत्वपूर्ण स्थान भी दिया गया है पदार्थ के अन्तर्गत। कर्म पदार्थ की काफी आलोचना भी की गयी है फिर भी इसकी विशेषताओं के कारण ये आज भी कहीं न-कहीं उपयोगी है और उनका विचार आवश्यक है।